International Journal of Technology and Applied Science (IJTAS)

E-ISSN: 2230-9004 ● Website: www.ijtas.com ● Email: editor@ijtas.com

चीनी यात्रि ह्वेनसांग द्वारा बौद्धधर्म का ऐतिहासिक पर्यवेक्षण

Kritika Pareek[1], Dr. Shish Ram Boyat[2]

[1]Research Scholar, [2]Supervisor
Dept. of History
OPJS University, Churu, Rajasthan

सार:
ह्वेनसांग की भारत यात्रा का उद्देश्य बौद्ध धर्म से सम्बन्धित तीर्थ स्थलों के दर्शन करना था। ह्वेनसांग ने अपनी भारत यात्रा में सभी जगहों पर की धार्मिक स्थिति का अवश्य वर्णन किया है। ह्वेनसांग के विवरणों से उस समय की धार्मिक प्रथाओं अथवा संस्थाओं का ज्ञान प्राप्त होता है। ह्वेनसांग बताता है कि भारत में उस समय बौद्ध धर्म के अलावा जैन धर्म व हिन्दू धर्म भी थे। वह बौद्ध धर्म को 18 सम्प्रदायों में बंटा हुआ बताता है। जिनमें स्थिविरवाद, सर्वास्तिवाद, सम्मतीयवाद, महांसांधिक, हीनयान और महायान प्रमुख थे।

संकेत शब्द : महांसांधिक, हीनयान , महायान

परिचय

ह्वेनसांग भारत के सीमांत प्रदेशों में जहां वह गया, उसने बौद्ध धर्म के साथ-साथ वहां जो भी अन्य धर्म प्रचलित था, उसका वर्णन किया। लम्बगान के राज्य के बारे में वह कहता है कि यहां लगभग 10 संघाराम थे किन्तु इनमें भिक्षुओं की संख्या काफी कम है और इनमें महायान सम्प्रदाय का अध्ययन करने वालों की संख्या ज्यादा है, यहां पर अनेक मिन्दर हैं जो अलग-अलग देवताओं से सम्बन्धित हैं। यहां के लोग बौद्ध धर्म की अपेक्षा हिन्दू धर्म को मानने वाले ज्यादा हैं। लमगांव से 100 ली. की दूरी पर नगरहार नगर है, यहां पर संघारामों की संख्या तो काफी है परन्तु उनमें भिक्षुओं की संख्या कम है और यहां पर स्तूप भी गिरे हुए हैं। यहां पर 5 देव मन्दिर हैं जिनमें पूजा करने वालों की संख्या लगभग 100 है। इस नगर के पूर्व में 3 ली. की दूरी पर 300 फुट ऊँचा, राजा अशोक का बनवाया हुआ एक स्तूप है जिसकी बनावट भी अद्भुत है। नगर के भीतर एक बड़े स्तूप की टूटी-फूटी नींव है। ऐसा कहा जाता है कि इस स्तूप में महात्मा बुद्ध का एक दांत था। वह बहुत ऊँचा व सुन्दर था परन्तु अब दांत नहीं है। केवल प्राचीन नींव टूटी-फूटी अवस्था में है। इसके निकट ही एक स्तूप 30 फीट ऊँचा है। इसका वास्तविक वृतांत किसी को मालूम नहीं। केवल यह कहा जाता है कि यह स्वर्ग से गिर कर स्वयं यहां खड़ा हो गया।

आगे चीनी यात्री गान्धार नगर का वर्णन करता हुआ कहता है कि यहां थोड़े से लोग ही सत्य धर्म (बौद्ध-धर्म) के अनुयायी हैं और अधिकांशतः वे विधमी (अबौद्ध) सम्प्रदायों में विश्वास करते हैं। वह आगे कहता है कि प्राचीन काल से लेकर अब तक कितने ही शास्त्र रचयिता भारत इस सीमान्त प्रदेश में पैदा हो चुके हैं। जिनमें प्रमुख हैं - नारायण देव असंग, बौद्धिसत्व, वसुबन्ध, धर्मभाम, मनोहित, पार्श्व तथा महात्मा आदि। यहां पर अब लगभग 1000 संघाराम हैं जो इस समय सभी उजड़ी और बिगड़ी अवस्था में हैं और उनमें घास-फूस उगा हुआ है और नितान्त जनशून्य है। स्तूप भी अधिकतर नग्नावस्था में हैं। यहां पर बौद्ध धर्म के अतिरिक्त विभिन्न धर्मों के लगभग 100 मन्दिर हैं जो सभी के सभी अच्छी तरह आबाद हैं। इस नगर की राजधानी के भीतर पूर्वोत्तर दिशा में एक पुराना खण्डहर है। पहले इस स्थान पर एक बहुत बड़ा सुन्दर बुर्ज था। जिसके भीतर बुद्ध देव का भिक्षा-पात्र था। बुद्ध के निर्वाण प्राप्त करने के पश्चात् बुद्ध देव का वह पात्र इस देश में आया था और कई सौ वर्षों तक उस भिक्षा पात्र का पूजन होता रहा तथा अब भिन्न-भिन्न प्रदेशों में होता हुआ वह अब फारस पहुंच गया है।

ह्वेनसांग आगे एक प्राचीन संघाराम का वर्णन करता है जिसका निर्माण राजा कनिष्क द्वारा करवाया गया था। यह संघाराम कई तलों वाला है। यद्यपि यह कहीं-कहीं से नग्न हो चला है तथापि इसकी अद्भुत बनावट अभी भी लुप्त नहीं हुई है। यह अब भी काफी सुन्दर दिखाई देता है। इस संघाराम में रहने वाले साधुओं की संख्या काफी कम है, जो साधु यहां पर रहते हैं वे सभी हीनयान सम्प्रदाय को ही मानने वाले हैं। इस संघाराम में पार्शिवक अर्थात् पार्श्व के रहने की बात करते हुए ह्वेनसांग कहता है कि उन्होंने 80 वर्ष की अवस्था

में बौद्ध धर्म स्वीकार किया था। वसुबन्धु का सम्बन्ध भी इस संघाराम से जोड़ते हुए कहता है कि उसने अभी धम्म शास्त्र की रचना यहीं की थी। मोहित ने भी इस संघाराम विभाषाशास्त्र की रचना की थी जो बुद्ध के निर्वाण के बाद 1000 वें वर्ष के बीच हुए।

उद्यान राज्य के बरे में ह्वेनसांग कहता है कि यहां पर महायान पंथी बौद्ध-भिक्षु की संख्या ज्यादा है। यहां पर लगभग 1400 संघाराम थे। परन्तु संघाराम की संख्या देखते हुए भिक्षुओं की संख्या काफी कम थी। परन्तु कभी वहां दस हजार भिक्षु रहा करते थे। यहां के भिक्षुओं में विनय का स्र्वास्तिवादी, धर्मगुप्त, , महिशासक, काश्यपीय और महासांघिक नामक 5 सम्प्रदायों का प्रचलन था। यहां हिन्दू देवाताओं के लगभग 10 मन्दिर थे जहां मिले-जुले रूप में अबौद्व रहते थे। उद्यान की राजधानी मुंगाली के पूर्व चार-पांच ली. की दूरी पर एक स्तूप है जहां पर दैविय घटनाएं दृष्टिगोचर हुआ करती थी। यह वही स्थान है जहां महात्मा बुद्ध जीवित अवस्था में शान्ति के अभ्यासी ऋषि थे और कलिराज के लिए अपने शरीर के टुकड़े-टुकड़े करने की यातना को सहन करते थे। यहां पर ह्वेनसांग को अनेक अवैध स्तूप, संघाराम अथवा ऐसे स्थान मिले हैं जिन्हें वह बड़ी श्रद्धापूर्वक तथागम बुद्ध, मैत्रेय, शाक्य, बौद्धिसत्व, नागों आदि की पुरा कथाओं और बौद्ध किंववदन्तियों से जोड़ता है।
ह्वेनसांग बोलोरा नगर का वर्णन करता हुआ कहता है कि इस नगर में लगभग 100 संघाराम हैं और इनमें लगभग 1000 भिक्षु हैं जो अध्ययनशील नहीं हैं और अपने नैतिक आचरण में भी ढोले हैं। आगे वह तक्षशिला पहुंचा, जहां पर वह बताता है कि संघाराम तो काफी संख्या में है परन्तु वे वीरान हैं जिनमें भिक्षुओं की संख्या बहुत थोड़ी है। जो भिक्षु हैं वे सभी महायान पंथ का पालन करने वाले हैं।

आगे चीनी यात्री कश्मीर पहुंचा। जहां पर उसने 1000 संघारामों को देखा जिनमें रहने वाले भिक्षुओं की संख्या वह 5000 बताता है। इस नगर में वह चार स्तूपों का वर्णन करता है जो अशोक राज द्वारा निर्मित है और प्रत्येक में तथागत के कुछ न कुछ अवशेष हैं। बौद्ध धर्म की तीसरी संगीति की परम्परा का उल्लेख करता हुआ वह कहता है कि तथागत के निर्वाण के 400 वर्ष में गांधार राज कनिष्क ने गद्दी धारण करने के बाद बहुत दूर-दूर के देशों को अपने अधीन किया और उसका यश बहुत दूर-दूर तक फैला। वह नित्य एक भिक्षु को उपदेश देने के लिए आमन्त्रित किया करता था। पुनच नगर के बारे में ह्वेनसांग कहता है कि यहां के लोग बौद्ध धर्म को मानने वाले हैं। यहां पर 5 संघाराम हैं जो वीरान पड़े हैं। नगर के उत्तर की ओर एक संघाराम है जिसमें थोड़े से संन्यासी निवास करते हैं। यहां पर एक स्तूप बना हुआ है जो अद्भुत चमत्कारों के लिए प्रसिद्ध है।

राजपुरी नगर जो कि कशमीर राज्य के अधीन है वहां पर 10 संघाराम हैं जिनमें थोड़े से भिक्षु रहते हैं। बहुत से अन्य धर्मावलम्बी भी रहते हैं जिनके देवताओं का एक मन्दिर है। शाकल के प्राचीन नगर में एक संघाराम 100 संन्यासियों समेत है जो सभी हीनयान सम्प्रदाय के अनुयायी हैं। पूर्वकाल में वसुबन्धु बोधिसत्व ने इस स्थान पर परमार्थ सत्यशास्त्र को बनाया था। संघाराम के पार्श्व में एक स्तूप 200 फीट ऊँचा है। इस स्थान पर पूर्वकालिक चार बुद्धों ने धर्मोपदेश किया था जिनके इधर-उधर फिरने के निशान यहां पर बने हुए हैं।

चिनापटी का उल्लेख करते हुए ह्वेनसांग बताता है कि इस नगर की राजधानी से 500 ली. की दूरी पर 'तामसंवन' नामक एक संघाराम है, जिसमें लगभग 300 संन्यासी निवास करते हैं। जिनका सम्बन्ध सर्वास्तिवाद संस्था से है। ये लोग अपने शील स्वभाव और शुद्ध आचरण के लिए बहुत प्रसिद्ध हैं और हीनयान सम्प्रदाय के अनुसार धार्मिक कृत्य करते हैं। तामसवन संघाराम में एक स्तुप 200 फीट ऊँचा राजा अशोक का बनवाया हुआ है। यहां पर संघाराम इतने अधिक बने हुए हैं कि उनका विस्तार 20 ली. के घेरे में है। जालंधर नगर का वर्णन करते हुए ह्वेनसांग कहता है कि इस नगर में 50 संघाराम हैं और इनमें रहने वाले भिक्षुओं की संख्या 2000 है। इस नगर में हीनयान और महायान दोनों सम्प्रदायों के अनुयायी रहते हैं। इनके अलावा इस नगर में तीन देव मन्दिर भी हैं और 500 अबौद्ध भी हैं जो सभी पाशुपत सम्प्रदाय के हैं। यहां के शासक का गुणगान करते हुए वह कहता है कि भारत वर्ष में ऐसी कोई जगह नहीं, जहां वह गया न हो और उसने स्तूप व संघाराम न बनवाए हों।

परियात्रा से 500 ली. पूर्व में मथुरा देश है। यहां पर संघारामों की संख्या बीस थी। जिनमें 2000 संन्यासी हैं जो समान रूप से हीन्यान और महायान सम्प्रदाय के आश्रित हैं। इन भिक्षुओं का जीवन सरल एवं पवित्र था। यहां उसने अशोक निर्मित बौद्ध स्तूप के दर्शन किए तत्पश्चात् वह थानेश्वर गया। यहां उसने अशोक निर्मित 300 फुट ऊँचे स्तूप के दर्शन किए और ज्ञान गुप्त विद्वान से 'सौतान्त्रिक' और 'विभाषा' का अध्ययन किया। यहां से चलकर उसने हरियाणा में ही स्थित स्रुघ्न (सुघ) नामक स्थल का भ्रमण किया। यहां उसने 5 संघाराम देखे जिनमें एक हजार हीनयानी भिक्षु निवास करते थे। राजधानी के दक्षिण-पश्चिम में यमुना के पश्चिमी तट पर उसने संघाराम और उसके पूर्वीद्वार पर अशोक निर्मित स्तूप देखा। इसी के नजदीक एक स्तूप में तथागत के पवित्र अवशेष सुरक्षित थे और इस स्तूप के दोनों ओर सारिपुत्र और मौद्धगल्यायन के अस्थि अवशेषों युक्त स्तूप निर्मित थे। ह्वेनसांग ने 635 ई. में

मतिपुर में बसन्त ऋतु का आधा समय और पूर्व ग्रीष्म ऋतु व्यतीत की। तत्पश्चात् वह ब्रह्मपुर, गोविषाण, वीरासन, अहिच्छत्र की यात्रा करते हुए कपित्थ पहुंचा। यहां उसने चार संघाराम और एक हीनयानी भिक्षु देखे, नगर में दस देवालय भी थे। तत्पश्चात कपित्थ से वह कन्नौज गया और भद्रविहार में 636 ई. के तीन माह व्यतीत किए। भद्र विहार से उसने अयोध्या और श्रावस्ती की यात्रा की। अयोध्या से प्रयाग जाते समय मार्ग में उसे ठगों ने पकड़ लिया। वे उसे देवी की बलि चढ़ाना चाहते थे लेकिन सौभाग्य से वह बच गया। प्रयाग से वह कौशाम्भी पहुंचा और उसके पश्चात् वह उत्तर-पूर्वी की ओर चलकर क्रमशः कपिलवस्तु, लुम्बिनीवन, रामग्राम और कुशीनगर की यात्रा करते हुए काशी पहुंचा। इसके पश्चात् वह वैशाली और उसके बाद नेपाल पहुंचा। नेपाल से पुनः वैशाली आया और दक्षिण पश्चिम में गंगा पार करके उसने मगध राज्य में प्रवेश किया।

ह्वनसांग सर्वप्रथम पाटलिपुत्र गया जहां उसने अशोक द्वारा निर्मित अनेक स्तूपों को देखा था। पाटलिपुत्र से उसने बौद्धगया की यात्रा की और बौद्धि वृक्ष की पूजा की एवं वज्रासन के दर्शन किए। यहां से उसने नालंदा मठ के लिए प्रस्थान किया। उसने अपने संस्करणों में नालंदा विश्वविद्यालय विस्तार का वर्णन किया है। यहां कुछ समय रहने के बाद वह राजगृह गया और वहां गृध्रकूट और वेनुवन के दर्शन करके पुनः नालंदा लौट आया। नालंदा में उसने योगशास्त्र, प्रजनन-मुलशास्त्र-टभ्का, शब्द विद्या हेतु विद्या और संस्कृत व्याकरण का अध्ययन किया। इसके अतिरिक्त उसने हिन्दू धर्म की पवित्र पुस्तकों का भी अध्ययन किया। नालंदा में दो वर्ष रहने के पश्चात् उसने हिरण्यपर्वत के लिए प्रस्थान किया। यहां उसने एक वर्ष तक तथा गुप्त से 'विशाखा' एवं 'न्यायशास्त्र' का अध्ययन किया। यहां से वह पुण्ड्रवन, कर्ण-सुवर्ण, समतट और ताम्रलिप्ति पहुंचा। 638 ई. का वर्ष उसने बंगाल और चम्पा में व्यतीत किया। ह्वेनसांग ने 639 ई. के कई महीने अमरावती में व्यतीत किए और बौद्ध साहित्य का अध्ययन किया। 640 ई. के आरम्भ में वह कांचीपुर में रहा। यहां लंका के भिक्षुओं ने उससे भेंट की। यहां से उत्तर-पश्चिम की ओर यात्रा करता हुआ महाराष्ट्र पहुंचा। यहां का शासक पुलिकेशियन द्वितीय था। नर्मदा नदी पार करके ह्वेनसांग भड़ौच पहुंचा और 641 ई. की वर्षा ऋतु में वह वल्लभी पहुंचा। इसके बाद उसने सौराष्ट्र और गुजरात की यात्रा की। गुजरात से दक्षिण-पूर्व में यात्रा करते हुए वह उज्जैन गया और उज्जैन से सिन्ध पहुंचा। अचानक वह मगध की ओर मुड़ा और नालंदा आया। यहां से वह चीन वापिस जाना चाहता था। नालंदा में उसने सर्वास्तिवाद के विद्वान प्रज्ञाभद्र के साथ सात महीने व्यतीत किए। यहां से वह बौद्धगया गया और उसके बाद नालंदा वापिस आया। तत्पश्चात् ह्वेनसांग ने कामरूप की यात्रा की जहां राजा भास्करवर्मन ने उसका भव्य स्वागत किया। यहीं उसे हर्षवर्धन का निमंत्रण मिला। कन्नौज में हर्ष ने बड़ी सभा बुलाई, जहां वह ह्वेनसांग के साथ उपस्थित हुआ। कन्नौज की इस सभा में तीन हजार से अधिक हीनयानी तथा महायानी भिक्षु और तीन हजार ब्राह्मणों, निग्रन्थों के अतिरिक्त 18 राजकुमारों ने भी भाग लिया। यहां से ह्वेनसांग 18 राजकुमारों और राजा हर्ष के साथ प्रयाग और पुनः हर्ष के जुलूस में सम्मिलित होकर पाटलिपुत्र से प्रयाग और कौशाम्बी होत हुए कन्नौज पहुंचा। उसने इन विवरण स्थानों पर हुए धार्मिक उत्सवों का पूर्ण विवरण दिया है जो तत्कालीन बौद्ध धर्म की सार्वजनिक रीतियों पर प्रकाश डाला है। ह्वेनसांग ने 643 ई. का प्रारम्भिक समय हर्ष के दरबार में व्यतीत किया और हर्ष से चीन जाने की आज्ञा प्राप्त की। हर्ष ने बहुत सा सामान और परिचय पत्र ह्वेनसांग को दिए। उसने मन्त्रियों और अधिकारियों को ह्वेनसांग के साथ जालंधर तक भेजा।

ह्वेनसांब का उपरोक्त यात्रा विवरण हमें भारत के विभिन्न क्षेत्रों में बौद्ध धर्म और हिन्दू धर्म की स्थिति का ज्ञान कराता है। जिन-जिन स्थानों का उसने भ्रमण किया, वहां बौद्ध धर्म की स्थिति, उसके विहारों की संख्या और उनमें रहने वाले भिक्षुओं का भी उल्लेख वह करता है। उसने अपने लेखों में विभिन्न स्थानों पर हिन्दू धर्म के देवालयों की संख्या का भी उल्लेख किया। उसके विवरणों से पता चलता है कि यद्यपि हर्ष जैसे शासकों ने बौद्ध धर्म की प्रगति हेतु प्रयास किए और नालंदा आदि विहारों को आर्थिक सहायता भी दी। लेकिन ह्वेनसांग के समय हिन्दू धर्म की मान्यता अधिक थी। जबकि बौद्ध धर्म अपनी पूर्व स्थिति प्राप्त नहीं कर पाया था। ह्वेनसांग का भारत को ब्राह्मणों का देश कहना भी आभास देता है कि उस समय अधिकांश भारतीय हिन्दू धर्म के अनुयायी थे।

संदर्भ ग्रन्थ सूची:

1. कनिंघम, ए., प्राचीन भारत का ऐतिहासिक भूगोल, इलाहाबाद, 1979
2. झा, डी.एन. कृष्णमोहन, प्राचीन भारत का इतिहास बुद्धिज्म इन
3. श्री माली , क्लासीकल ऐज, दिल्ली, 1985
4. पाण्डेय, वी.सी., प्राचीन भारत का इतिहास, दिल्ली, 2014
5. पाठक, विशुद्धानन्द, पांचवीं-सातवीं शताब्दी का भारत
6. बील, सैमुअल, बुद्धिस्ट रिकार्ड ऑफ द वेस्ट्न वर्ल्ड, दिल्ली, 1995
7. दी लाइफ ऑफ ह्वेनसांग, दिल्ली, 1973
8. दी ट्रैवल्स ऑफ फाह्यान एंड सुग युन, दिल्ली, 1998
9. मुखर्जी, पी.के., इंडियन लिट्रेचर इन चाईना एण्ड फार ईस्ट, कलकत्ता, 2012

10. मार्शल, नागौरी, एस.एल., प्रिंसीपल्स ऑफ इक्नोमिक्स, प्राचीन , भारत
11. मजूमदार, आर.सी., दी क्लासीकल ऐज, भारतीय विद्या भवन, बम्बई, 2009